Status of implementation of recommendations contained in the Fourteenth Report (Fifteenth Lok Sabha) of the Department-related Parliamentary Standing Committee on Urban Development on Demands of Grants 2011-12 of the Ministry of Urban Development

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF URBAN DEVELOPMENT (SHRI SAUGATA RAY) : Sir, I make a statement regarding status of implementation of recommendations contained in the Fourteenth Report (Fifteenth Lok Sabha) of the Department-related Parliamentary Standing Committee on Urban Development on Demands for Grants 2011-12 of the Ministry of Urban Development.

MATTERS RAISED WITH PERMISSION

Opposition to construction of dam in North-Eastern border of Tawang by local monks and villagers

श्री तरुण विजय (उत्तराखंड) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं भारत के एक सीमावर्ती राज्य अरुणाचल प्रदेश में चल रहे एक नागरिक आन्दोलन की ओर सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ।

महोदय, अरुणाचल प्रदेश भारत का 'जय हिन्द प्रदेश' कहा जाता है, जहाँ ग्रामीण स्तर पर भी लोग एक-दूसरे का 'जय हिन्द' कह कर अभिवादन करते हैं, जहाँ सामान्य स्तर पर हिन्दी बोली जाती है और जहाँ की देश भक्ति पूरे हिन्दुस्तान के लिए प्रेरणा का विषय है। वहाँ तवांग है, जहाँ बौद्ध लोगों का पूरे विश्व में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मठ है। यह तवांग वह क्षेत्र है, जिस पर चीन की कुदृष्टि है और वह दुश्मनी की नजर से अरुणाचल और तवांग की ओर देखता है। वह उस पर अपना दावा भी ठोकता है।

सर, उस पूरे प्रदेश में 50 हजार मेगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता है। 30 हजार मेगावाट पॉवर प्रोडक्शन करने के लिए 10 साल का उन्होंने एक समझौता कर लिया है, जिसकी पूरे देश को आवश्यकता है। लेकिन, उपसभाध्यक्ष महोदय, तवांग क्षेत्र में जो हाइडल पावर के प्रोजेक्ट्स बन रहे हैं, उनके विरोध में पिछले कुछ समय से वहाँ के ग्रामीण और बौद्ध भिक्षु सड़कों पर उतर आए हैं। वहाँ पर पावर प्रोजेक्ट बनाने वाली कम्पनीज़ के दफ्तर उन्होंने बर्बाद कर दिए हैं। वहाँ के जो इंजीनियर्स वहाँ पर हाइडल पावर प्रोजेक्ट के लिए काम करने जाते हैं, उनको वे प्रोजेक्ट बनाने नहीं देते और इस कारण वहाँ पर एक बड़ा आन्दोलन शुरू हो गया है। वह आन्दोन हिंसक होने की दिशा में भी बढ़ सकता है, अगर सरकार उसकी ओर ध्यान नहीं देगी। उनका कहना है कि जब तक हम हिंसा न करें, जब तक हम विद्रोही और आतंकवादी स्वर न करें, सरकार हमारी ओर ध्यान नहीं देती। वहाँ के बौद्ध भिक्षु और वहाँ के नागरिक अरुणाचल प्रदेश से, तवांग से दिल्ली में आए। वे मुझसे भी मिले। उन्होंने सरकार से मिलने के लिए समय माँगा, लेकिन सरकार के किसी मंत्री ने उन्हें मिलने का समय नहीं दिया।

उपसभाध्यक्ष महोदय, उनको यहाँ आने में पाँच दिन लग जाते हैं, तब वे दिल्ली पहुँच पाते हैं। वे अपना खर्चा कर के यहाँ आते हैं। क्या सरकार का कर्त्तव्य नहीं कि तवांग जैसे क्षेत्र में हो रहे एक बड़े जन-आन्दोलन, जिसको बौद्ध भिक्षु भी चला रहे हैं, उसकी ओर ध्यान दे? सरकार के मंत्री मुझसे कहते हैं कि तरुण जी, आप इस बारे में ध्यान मत दीजिए, शायद चीन के लोग उनको भड़का रहे हैं। क्या यह जिम्मेदारना बात है? अगर आज चीन के लोग इस प्रकार के हाइडल पावर प्रोजेक्ट्स को शुरू करने के बारे में पीछे से आन्दोलन भड़का रहे हैं, तो सरकार की और भी जिम्मेदारी बनती है कि वह तुरंत वहाँ किसी केन्द्रीय मंत्री को भेज कर उन लोगों

[श्री तरुण विजय]

से बात करे। वे लोग हिन्दुस्तानी हैं, तिरंगे का नाम लेते हैं, 'जय हिन्द' की शपत लेते हैं, हिन्दी में बात करते हैं और जब वे अपनी वेदना और पीड़ा व्यक्त करने के लिए दिल्ली आते हैं, तो सरकार के पास उनसे बात करने का वक्त नहीं होता। क्या तवांग में आप एक भारत-विरोधी विद्रोही आन्दोलन शुरू करने की भूमिका बनाना चाहते हैं और क्या जब तक वे हिन्दुस्तान के खिलाफ बात न करें, आतंकवादी बात न करें, तब तक आप उनकी बात नहीं सुनेंगे?

सर, मेरा सरकार से आग्रह है कि ...**(समय की घंटी)**... ऐसे आन्दोलन को बढ़ने न दिया जाए। उसका तुरंत समाधान किया जाए। उनसे बातचीत की जाए। यह दिशा भारत के लिए उचित होगी, यह मैं माँग करता हूँ।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश) : सर, मैं स्वयं को इस विषय से सम्बद्ध करती हूँ।

श्रीमती माया सिंह (मध्य प्रदेश) : सर, मैं स्वयं को इस विषय से सम्बद्ध करती हूँ।

श्री नतुजी हालाजी ठाकोर (गुजरात) : महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से सम्बद्ध करता हूँ।

श्री मंगल किसन (ओडिशा) : महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से सम्बद्ध करता हूँ।

डा. एम.एस. गिल (पंजाब) : महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से सम्बद्ध करता हूँ।

श्री दिलीपभाई पंडया (गुजरात) : महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से सम्बद्ध करता हूँ।

SOME HON. MEMBERS : Sir, we associate ourselves with what the hon. Member, Shri Tarun Vijay, has said.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : Okay, the whole House Associates.

Implication of the reported statement of Hillary Clinton advising India to reduce import of oil from Iran

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, अमेरिका की विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन ने अभी अपनी भारत यात्रा के दौरान हिन्दुस्तान की सरकार को सलाह दी कि वह ईरान से तेल आयात करने में कटौती करे। यह सीधे-सीधे हमारे देश की विदेश नीति को प्रभावित करने की एक साजिश है।

मान्यवर, विदेश नीति के निर्धारण में राष्ट्र हित उसका केन्द्र बिन्दु होता है और राष्ट्रहित इस बात में निहित है कि हमारे मित्र देशों की संख्या कितनी ज्यादा है तथा शत्रु देशों की संख्या कितनी कम है। अगर हमारी गतिविधियों से या किसी अन्य की गतिविधियों से दुनिया में हमारे मित्र देश कम हों और शत्रु देशों की संख्या बढ़े, तो हमारी विदेश नीति असफल है। ईरान हमेशा से हमारा मित्र देश रहा है। बहुत विषम परिस्थितियों में भी ईरान का रुख सकारात्मक रहा है, हिन्दुस्तान के पक्ष में रहा है और उस देश को लेकर अमेरिकी विदेश मंत्री यह कहें कि हिन्दुस्तान को ईरान के साथ किस तरीके से रिश्ते रखने हैं, यह गंभीर बात तो है ही, चिंता की बात भी है और मुझे यह लगता है कि सारी दुनिया में अमेरिका अपनी * के बल पर दुनिया के दूसरे देशों को भी इसी तरह से उनकी विदेश नीति को, उनकी आंतरिक नीति को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है और वही हिन्दुस्तान के साथ हो रहा है।

---

* Expunged as ordered by the Chair.